आईआईएम रांची में रिसर्च कांफ्रेंस का हुआ समापन

CONFERENCE आईआईएम में रिसर्च कॉन्फ्रेंस संपन्न

रिजेक्शन से डरें नहीं, लिखते रहें'; शुभम ओझा को बेस्ट पेपर अवॉर्ड

सिटी रिपोर्टर• आईआईएम रांची में दो दिवसीय 'तीसरी डॉक्टोरल रिसर्च कॉन्फ्रेंस (DRC) 2026' का समापन हुआ। देश भर से जुटे स्कॉलर्स के बीच इस कॉन्फ्रेंस में भविष्य के मैनेजमेंट रिसर्च और उसके सामाजिक असर पर गंभीर चर्चा हुई। कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन मुख्य वक्ता प्रो. एलिजाबेथ रोज (प्रो-वाइस चांसलर, ICFAI) ने "क्राफ्टिंग एन एकेडमिक करियर' थीम पर युवाओं के साथ अपने अनुभव बांटे। उन्होंने कहा कि रिजेक्शन से घबराएं नहीं, अपनी गलतियों से सीखें और लिखना कभी न छोड़ें। डायरेक्टर प्रो. दीपक श्रीवास्तव ने कहा कि रिसर्च सिर्फ कागजों तक सीमित न रहे, बल्कि वह क्लासरूम टीचिंग व रियल-वर्ल्ड की समस्याओं को सुलझाने वाली हों। आईआईएम कलकत्ता के पीएचडी स्कॉलर शुभम कुमार ओझा को 'बेस्ट पेपर अवॉर्ड' से नवाजा गया।

रिसर्च रिपोर्ट 2026: एक नजर में

समापन के दौरान प्रोग्राम चेयरमैन प्रो. मनीष बंसल ने 'एनुअल रिसर्च एंड पब्लिकेशन रिपोर्ट 2026' जारी की गई

- **139 रिसर्च पेपर्स:** इस साल 139 पेपर्स पब्लिश किए।
- **42% टॉप रैंकिंग:** कुल पब्लिकेशंस में से 42% पेपर वैश्विक स्तर के ABDC, A+ और A कैटेगरी जर्नल्स में छपे।
- **15 केस स्टडीज:** हार्वर्ड और आईवी पब्लिशिंग जैसे बड़े इंटरनेशनल प्लेटफॉर्म्स पर 15 केस स्टडीज जारी की गईं।

Dainik Bhaskar_13.06.2026_P. 04

आइआइएम रांची. दो दिवसीय डॉक्टोरल रिसर्च कॉन्फ्रेंस का हुआ समापन

खुद को लगातार बेहतर बनाना जरूरी

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

आइआइएम रांची में दो दिवसीय तीसरे डॉक्टोरल रिसर्च कॉन्फ्रेंस 2026 का आयोजन किया गया. इसमें पीएचडी कर रहे शोधार्थियों को अपने शोध कार्य प्रस्तुत करने, विशेषज्ञों से सुझाव लेने और अकादमिक चर्चा में भाग लेने का अवसर मिला. कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन शुक्रवार को आइसीएफएआइ फाउंडेशन फॉर हायर एजुकेशन की प्रो वाइस चांसलर प्रो एलिजाबेथ रोज ने मुख्य व्याख्यान दिया. उन्होंने कहा कि अकादमिक क्षेत्र में सफलता के लिए लगातार खुद को बेहतर बनाना जरूरी है. साथ ही पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाये रखने पर भी जोर दिया. आइआइएम रांची के निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि शोध और शिक्षण दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं. शोध से नया ज्ञान विकसित होता है, जिससे पढ़ाई बेहतर होती है और समाज की वास्तविक समस्याओं का समाधान खोजने में मदद मिलती है. इस अवसर पर संस्थान की रिसर्च एंड पब्लिकेशन एनुअल रिपोर्ट 2026 का भी विमोचन किया गया. डॉक्टोरल प्रोग्राम एंड रिसर्च के चेयरपर्सन प्रो मनीष बंसल ने बताया कि इस वर्ष आइआइएम रांची के फैकल्टी सदस्यों ने वित्त, मार्केटिंग, सूचना प्रणाली, बिजनेस एनालिटिक्स, ऑपरेशन मैनेजमेंट और लिबरल आर्ट्स समेत विभिन्न क्षेत्रों में 139 शोध पत्र प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किये हैं.

कॉन्फ्रेंस में शामिल डायरेक्टर और अन्य.

एक्सआइएसएस-आइसीएमआर के बीच हुआ समझौता

रांची. जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एक्सआइएसएस) रांची और इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ट्राइबल हेल्थ रिसर्च (आइसीएमआर-एनआइटीएचआर) जबलपुर के बीच एमओयू हुआ. इसके तहत आदिवासी इलाकों में हेल्थकेयर डिलीवरी सिस्टम में कमियों और चुनौतियों की पहचान करनी है. यह सहयोग भारत में पीवीटीजी आदिवासियों की सेहत को बेहतर बनाने के लिए रिसर्च-बेस्ड उपायों को मजबूत करने की दिशा में अहम कदम है. इस एमओयू पर संस्थान के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे और आइसीएमआर-एनआइटीएचआर जबलपुर के निदेशक डॉ प्रवीण भारती ने हस्ताक्षर किये.

Prabhat Khabar_13.06.2026_P. 09

आईआईएमः एआई और सतत विकास पर केंद्रित रहा संस्थान का डीआरसी-2026

असफलताओं से सीखें और अपना रास्ता खुद बनाएं: प्रो. एलिजाबेथ

- समापन पर सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किए गए
- सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र का पुरस्कार आईआईएम कोलकाता के शोधार्थी को

आईआईएम रांची में दो दिवसीय डॉक्टोरल रिसर्च कॉन्फ्रेंस का समापन शुक्रवार को हुआ। समापन समारोह के दौरान एक प्रतिभागी सहभागिता प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए।

रांची, विशेष संवाददाता। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रांची में दो दिवसीय तीसरे डॉक्टोरल रिसर्च कॉन्फ्रेंस (डीआरसी)-2026 का समापन शुक्रवार को शोध, नवाचार और अकादमिक उत्कृष्टता के संदेश के साथ हुआ। सम्मेलन में विभिन्न संस्थानों के पीएचडी शोधार्थियों ने अपने शोध कार्य प्रस्तुत किए और विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त किया। कार्यक्रम में शोधार्थियों को अपने शोध पर रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करने व समकालीन विषयों पर अकादमिक विमर्श में भागीदारी का अवसर मिला।

सम्मेलन के दूसरे दिन की शुरुआत आईसीएफएआई फाउंडेशन फॉर हायर एजुकेशन की प्रो-वाइस चांसलर व आईआईएम उदयपुर की पूर्व रिसर्च चेयर प्रोफेसर प्रो एलिजाबेथ रोज के वक्तव्य से हुई। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि अकादमिक करियर प्रत्येक व्यक्ति की अपनी यात्रा होती है, जो अक्सर सीधी रेखा में नहीं चलती। उन्होंने शोधार्थियों को लगातार स्वयं को बेहतर बनाने, असफलताओं से सीखने और अस्वीकृतियों के बावजूद लेखन जारी रखने की सलाह दी। प्रो रोज ने कहा कि शोधकर्ताओं को अपना मार्ग स्वयं बनाना चाहिए व लक्ष्य के प्रति समर्पित रहकर निरंतर सीखते रहना चाहिए। उन्होंने शोध में नैतिक मूल्यों, समय-प्रबंधन, दृढ़ता और सहयोगात्मक कार्य संस्कृति के महत्व पर भी जोर दिया। इसके अलावा उन्होंने शोध प्रक्रिया पर एक संवादात्मक सत्र का संचालन किया, जिसमें शोधार्थियों ने विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे और मार्गदर्शन प्राप्त किया।

मौके पर रिसर्च एंड पब्लिकेशन एनुअल रिपोर्ट 2026 का भी विमोचन किया गया। रिपोर्ट की मुख्य बातें साझा करते हुए डॉक्टोरल प्रोग्राम एंड रिसर्च (डीपीआर) के अध्यक्ष प्रो मनोष बंसल ने बताया कि वर्ष के दौरान आईआईएम रांची के शिक्षकों ने वित्त एवं लेखांकन, विपणन, सूचना प्रणाली व बिजनेस एनालिटिक्स, संचालन प्रबंधन, ओबीएचआर, अर्थशास्त्र एवं लोक नीति, रणनीति व लिबरल आर्ट्स एंड साइंसेज सहित विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित पीयर-रिव्यूड पत्रिकाओं में 139 शोध पत्र प्रकाशित किए। उन्होंने बताया कि इन प्रकाशनों में से 42 प्रतिशत शोध पत्र एबीडीसी की ए प्लस, ए और अन्य उच्च श्रेणी की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। संस्थान का शोध कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल परिवर्तन, सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, वित्तीय बाजार, लोक नीति, स्वास्थ्य सेवा, उपभोक्ता व्यवहार और भविष्य के कार्यस्थल जैसे समकालीन विषयों पर केंद्रित रहा। कहा, आईआईएम रांची का शोध संयुक्त राष्ट्र के 21 सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से संबंधित विषयों में योगदान दे रहा है। बताया कि संस्थान ने 15 केस स्टडी विकसित कीं, जिनमें से कई प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय मंचों- आईवी पब्लिशिंग, हार्वर्ड बिजनेस स्कूल पब्लिशिंग और एमराल्ड इमर्जिंग मार्केट्स केस स्टडीज में प्रकाशित हुई। संकाय सदस्यों ने पुस्तकों, पुस्तक अध्यायों और पुस्तक समीक्षाओं के रूप में 20 कृतियों का योगदान दिया। शोध सहयोग के लिए 25 थर्सडे सेमिनार सीरीज, 20 गेस्ट सेमिनार सीरीज व कई शोध पद्धति कार्यशालाओं का आयोजन भी किया।

समापन समारोह के दौरान सभी 10 प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार आईआईएम कोलकाता के पीएचडी शोधार्थी शुभम कुमार ओझा को उनके शोधपत्र- शहरीकरण से होने वाले नकारात्मक बाहरी प्रभावों को अपनानाः भारत के रर्बन मिशन से मिले सबूत, के लिए प्रदान किया गया।

वास्तविक चुनौतियों का भी हल खोजें छात्रः प्रो. दीपक

आईआईएम के निदेशक प्रो. दीपक श्रीवास्तव ने प्रबंधन शिक्षा में शोध और शिक्षण के संतुलन की आवश्यकता पर बल दिया। कहा कि शोध सिर्फ नए ज्ञान का सृजन ही नहीं करता, बल्कि शिक्षण को भी सुदृढ़ बनाता है और वास्तविक जीवन की चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने शोधार्थियों से सामाजिक रूप से प्रासंगिक और प्रभावशाली शोध करने का आह्वान किया व कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों से मिलने वाले अवसरों का लाभ उठाने की सलाह दी।